Edit with WPS Office

St. Lawrence High School

A JESUIT CHRISTIAN MINORITY INSTITUTION

Hindi Study Material (01)

Class- 11 पाठ - मैं नर्क से बोल रहा हूँ **(भाग 1)**

Date: 19/06/2020

कवि परिचय

हिंदी के प्रसिद्ध लेखक और व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई जी हिंदी के पहले रचनाकार हैं जिन्होंने व्यंग्य को विधा के दर्जे में प्रस्तुत किया। उनकी व्यंग्य में सामाजिक वास्तविकता का प्रत्यक्ष रूप हमारे समक्ष प्रस्तुत होता है। लगातार खोखली होती जा रही हमारी सामाजिक, राजनैतिक व्यवस्था में शोषित मध्यवर्गीय समाज की सच्चाई को उन्होंने बड़ी ही निपुणता के साथ प्रकट किया है। उनकी भाषा शैली में एक खास किस्म का अपनापन है, जिससे पाठक उनके समक्ष प्रस्तुत होने की महसूस करता है। ठिठुरता हुआ गणतंत्र हरिशंकर परसाई जी ने अत्यंत व्यंग्यात्मक तौर पर अपने काव्य के माध्यम से रचित किया है।
हरिशंकर परसाई जी के प्रमुख रचनाएं:
कहानी संग्रह- हँसते हैं रोते हैं, जैसे उनके दिन फिरे, भोलाराम का जीव।
उपन्यास- रानी नागफनी की कहानी, तट की खोज, ज्वाला और जल।
संस्मरण: तिरछी रेखाएं।
लेख संग्रह: तब की बात और थी, भूत के पांव पीछे, बेईमानी की परत, अपनी-अपनी बीमारी, प्रेमचंद के फटे जूते, आदि।
परसाई रचनावली (सजिल्द तथा पेपरबैक, छह खंडों में; राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित)
सम्मान- 'विकलांग श्रद्धा का दौर' के लिए हरिशंकर परसाई जी को साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।
साहित्यिक मसिकी- वसुधा।

सारांश

'मैं नर्क से बोल रहा हूं' एक लघु व्यंगात्मक कथा है, जो **1954** में 'परसाई रचनावली' खंड **2** में संकलित एवं प्रकाशित हुआ है। इस कहानी में परसाई जी समकालीन समाज में फैली भ्रष्टाचार का उग्र रूप का प्रदर्शन किए है। भ्रष्टाचार का उग्र प्रदर्शन किया गया इस कहानी में उन्होंने मनुष्य के लोभ एवं ताकत के आर में फैली समाज की नंगी तस्वीर अंकित कर मनुष्य के अंधविश्वास एवं कुंठित भावनाओं पर कड़वी व्यंग्य फरमाया है। यह ताकत आम जनता को गरीबी की अर्थनीति के अंधेरे संसार में डुबाकर खोखली बनाती जा रही है।
इसी सत्य को परछाई जी ने अपने इस कथा में व्यंग्यात्मकता के साथ प्रमाणित किया है। जो कुछ इस प्रकार है:-

जीवन एवं मरण की कटुता- आधुनिक भारत की सच्चाई उसके दिखावे से है। आज का युग भीषण स्वार्थ का युग बन चुका है, मनुष्य समाज के रीति-रिवाज, कर्मकांड के मायाजाल में इस प्रकार फंस चुका है कि उसका स्वार्थ हृदय जिस मासूम को जीवित रहने के समय काल में उसके अधिकार एवं सुख- शांति से वंचित रखा वही ढकोसलो से ग्रसित हृदय उस भले मानुष की मृत्यु के पश्चात मृत्यु के विविध संस्कार करते हैं। परसाई जी का यह कथन इस वक्तव्य को पूर्ण करते है- " जीवित अवस्था में तुम जिसकी ओर आंख उठाकर नहीं देखते उसकी सड़ी लाश के पीछे जुलूस बनाकर चलते हो। जिंदगी- भर तुम जिससे नफरत करते रहे उसकी कब्र पर चिराग जलाने जाते हो। मरते वक्त तक जिसे तुम्हें चुल्लू भर पानी नहीं दिया उसकी हाड़ गंगाजली ले जाते हो। अरे, तुम जीवन का तिरस्कार और मरण का सत्कार करते हो। इसलिए मैं मरकर बोल रहा हूं। मैं नर्क से बोल रहा हूं।"

आदर्शवाद की आड़ में पद लोलुपता- राजनीति एक ऐसा शब्द है जिसमें संपूर्ण संसार को दाव पर लगाकर एक आदर्शवाद की कल्पना कर सत्ता को कायम रखने की कोशिश की जाती है। देश में चाहे भुखमरी, महामारी और गरीबी से देशवासी कितना ही क्यों न त्रस्त हो लेकिन राजनीति के दांव- पेशों में सरकार देश को रामराज्य का झूठा प्रतिक सिद्ध करती है- "मंत्री ने संसद में कहा कि मेरी मौत भूख से नहीं मैंने आत्महत्या कर ली थी।"

धार्मिक रुढ़िबद्धता- गणतंत्र समाज में धर्म स्वार्थ का मात्र रक्षा कवच बना हुआ है। अमीर एवं प्रभावशाली वर्ग की संख्या इस देश में निमिष मात्र ही है। वह अपनी प्रभुसत्ता को कायम एवं स्थापित करने हेतु निम्न एवं शोषित वर्गों के अंधविश्वासों का फायदा लेते है। रामराज्य का हवाला देते हुए यह अत्याचारी वर्ग धर्म के नाम पर अपने स्वार्थ सिद्धि करते हैं। अपने अत्याचारों का निष्कलंक चिठ्ठा प्रस्तुत करने हेतु यह अमानवीय वर्ग धर्म का ही आड़ लेकर बैठा है, जिस पर अपनी दूरदर्शिता को दिखाते हुए परसाई जी ने कड़ारा विरोध इस कहानी के माध्यम से किया है।

आधुनिक काल में सत्ता के पीछे की आम जनता की स्थिति- आधुनिक गणतंत्र युग वास्तव में तानाशाही युग में परिणत हो चुका है, जहां ईश्वर भी मंत्रियों द्वारा झूठे पेशकश पर विश्वास रखते हैं। इसी सत्य को घोषित करने के लिए परसाई जी का यह व्यंग्य सार्थक सिद्ध होता है।
वास्तविकता तो यह है कि गरीब होना ही इस आधुनिक संसार में पाप है। जन्म से ही गरीब का इस चकाचौंध की दुनिया में अपना

Edit with WPS Office

निर्वाह करना ही दुविधाजनक बना हुआ है- "वास्तव में तो मैं जन्म के पश्चात एक क्षण ही जीवित रहा और दूसरे क्षण से मेरी मौत शुरू हो गयी।"

सांसारिक भेदभाव- औद्योगिकीकरण की यही त्रासदी है कि अमीर और अमीर एवं गरीब अत्यंत गरीब होते जा रहे हैं। एक ओर से अभावग्रस्त गरीब भूखे मर रहे है तो दूसरी ओर परमार्थ का विचार भूलकर यही तथाकथित अमीर वर्ग अन्न को गोदान में भरकर चूहों को शिकंदी पर पहुंचा रहे है, लेकिन अधिकारित मनुष्य उससे वंचित होता जा रहा है और मनुष्य की मृत्यु से अधिक श्रेष्ठ एवं दामी बनता जा रहा है- "बस यही झोपड़ी में रहा मैं। मेरे आस-पास अन्न- ही- अन्न था। दीवाल के पार से जो चूहे आते वे दिन-पर- दिन मोटे होते जाते.... पर मैं सिर्फ भूखा रहा। बेकार था। अनाज दस रुपए सेर था। इससे तो मेरे लिए मौत सस्ती थी।"
ताकत का रक्षक- गणतंत्र के इस समाज में आम जनता के लिए ही कोई स्थान नहीं है। समाज का संपूर्ण ध्यान अमीरों के तरफ है जो गरीबों की तादाद में कम है। यह अमीरी समाज शोषण एवं भ्रष्टाचार का केंद्र- बिंदु बना हुआ है। इस युग में साधारण जनों के लिए निर्मित रक्षक ही उसके भक्षक के रूप में स्थापित हैं- "आखिर मेरी मौत भी आयी। जिस दिन आयी, उस दिन अट्टालिका के उस पार वाले रईस के लड़के की शादी थी। बड़ा अमीर था। सारा गांव जानता था कि उसके पास हजारों बोरे अन्न था, पर कोई कुछ नहीं कहता था। पुलिस उसकी रक्षा करती थी।"

धन के प्रति मनुष्यत्व का विनाश- धन एक ऐसी बला है जिसके कारण मनुष्य अपना प्राण, अपने दिलो-दिमाग, अपना सोच एवं अपनी बुद्धि पूर्ण रूप से खो बैठता है। अपनी धरोहर को भूलकर इस लौकिक संसार के यश में ही अपना सर्वस्व न्योछावर कर अपनी परमार्थ शक्ति को भूलकर स्वर्थीपन के उच्च कोटि को हासिल करने के लिए हमेशा तत्पर है। परसाई जी का यह कथन इस तथ्य को बखूबी व्यक्त करते है- "मौत के जरा पहले मेरा कुत्ता बरबस दीवाल के उस पार घुस गया और पकवान खा गया। मालिक ने उसे खींचकर एक डंडा मारा और वह कराहता हुआ मेरे पास आकर पड़ गया। चीखता रहा, चीखता रहा।"

आधुनिक भूलोक से बेहतर परलोक- आधुनिक या अतिआधुनिक संसार की विडंबना है कि जिंदगी से मौत आसान बन चुका है। जीवन का अनुभव इतना कठिन बन चुका है कि मनुष्य के लिए मृत्यु प्राप्त करना ही एकमात्र उपाय बचा हुआ है। हृदय की सारी भावनाएं कठोर एवं निर्मम बनते जा रहे हैं। धरती पर हो रहे अत्याचार, शोषण अनधिकार के कारण अधिकारित मनुष्य वेदनाओं, कष्टों एवं त्रासदी में घिरकर मृत्यु को अपनाने की कोशिश करते हैं। धरती की अवस्था आज नर्क से भी बदतर बन चुका है- "ऐसा मरा। और मरकर यहां जब आया तो मुझे कुछ दुख नहीं हुआ, जब मैं नर्क में भेज दिया गया। मैंने प्रतिवाद करना सीखा नहीं था और यह स्थान भी उससे ज्यादा खराब नहीं था जहां मैं जिंदगी भर रह चुका था।"

आधुनिक समाज की विडंबना- ब्रिटिशों से स्वतंत्रता प्राप्त करने के पश्चात देश के काले अंग्रेजों ने ही देश की सत्ता को *l* संभाले हुए हैं। सत्ता से लोलुपता रखने वाले वर्ग आम जनता के प्रति अपने कर्तव्य को क्रमशः स्मृतिहीन करते जा रहे हैं। मनुष्य के अंदर की मनुष्यता का आज पूर्ण रूप से विध्वंस होता जा रहा है। मानवीयता को कायम रखते हुए मनुष्य ताकत एवं शक्ति का दास बना हुआ है। निर्धन अत्याचारियों को अत्याचार एवं शोषण करने के लिए संपूर्ण अवसर दे रहे हैं- "दोनों मरे, एक साथ मरे- फर्क इतना है कि वह खाकर मरा और मैं बिना खाये।"

आम आदमियों की कायरता- कायरता को संबोधित करते हुए लेखक लिखते हैं- "पाप पुण्य के झमेले में पड़नेवाले कायर*!*"
समाज में मनुष्य स्वयं सोच- विचार कर अपने अंदर एवं बाहर अनेकों ऐसे भी दीवाल बना लिए हैं जिसका निर्माता केवल मनुष्य ही है और उसी में गिर कर मनुष्य का जीवन विडंबनाओं से ग्रसित हो जाता है- "मूर्ख कायर, तू कुत्ते से भी हीन है। बेचारा कुत्ता दीवाल को लांघकर घुस गया और खाना खा आया। और तू आदमी कहलाने वाला, हाय- हाय करके मर गया। तू दीवाल लांघ नहीं सकता था*?* दीवाल तोड़ नहीं सकता था*?*"

अत*:* हरिशंकर परसाई जी ने समाज की ठोस नग्न वास्तविकता को अपने व्यंग्य के सहारे अपनी कथा में स्थान दिया है बुजदिल, कायर, भीरू मनुष्य को निडर आत्मसम्मानित एवं प्रतिवादी होने के लिए आग्रह करते हुए लिखा है- "मैं नर्क में ढकेल दिया गया। और मैं इस कोने से तुमसे कह रहा हूं कि हे। मेरे देशवासियों*!* मेरी जैसी मौत न मरना, मेरे कुत्ते की तरह मरना।"

Teacher's Name - Riya Saha